: द्वितीय अध्याय :

क्रान्ति का आशय :

भारत के क्रान्ति-आंदोलन का इतिहास.

द्वितीय अध्याय

क्रान्ति का आशय

विषय - प्रवेश -

भारत माता को स्वाधीन कराने के लिए जो मार्ग अपनाए गये उनमें "सशस्त्र क्रान्ति" भी एक विशेष महत्वपूर्ण मार्ग रहा है। हर देश की आजादी के प्रयत्नों के पीछे "सशस्त्र संग्राम" की एक परंपरा सी रही है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भी इस लक्ष्य से दूर नहीं है। सन १८५७ का स्वतंत्रता आंदोलन आगे के क्रान्ति आंदोलनो के लिए महान प्रेरणा तथा आत्मबल देनेवाला रहा है।

जब जब देश में पराधीनता के काले बादल लोगो का जीवन अंधःकारमय कर देते हैं, तब तब सभी देशों में देशप्रेम की भावना ने क्रान्ति का प्रखर रूप धारण किया है। अंग्रेजोंकी कूट दमन-निती का विरोध करने के लिए हमारे देशके नौजवानोंमें भी क्रान्ति की चेतना जागृत हुई और वे उग्र क्रान्तिकारी बनकर, शस्त्रोंके बलपर अंग्रेजी राज को हटाने में कार्यरत रहे। उनका असीम त्याग, आत्म बलिदान, प्रखर देशाभिमान को कभी किसीने निष्पक्ष दृष्टि से नहीं देखा है। उन्हें "फासिस्ट " कहकर बदनाम करनेकी ही चेष्टा की है।

इन शहीदोंपर लगाया यह कलंक मिटाने के लिए हमें "क्रान्ति" का समग्र रूप ध्यान में लेना आवश्यक है।

क्रान्ति की परिभाषाएँ और स्वरूप --

१. "क्रान्ति" संस्कृत "क्रम" धातु को "क्तिन" प्रत्य लगानेसे यह शब्द बना है, जिसके विविध अर्थ निम्न लिखित है --

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

इस प्रकार हमारे देश में तथा देश के बाहर जो भी क्रान्तिकार्य हुये वे सामूहिक न होने के कारण अंग्रेजों ने जहाँ तहाँ उन्हें दबाया। विदेशों में स्थित क्रान्तिकारियों के साहित्य में इस कमी को उभारा गया। पश्चिम में विकसित " मार्क्सवाद " के "सामाजिक क्रान्ति" के नाम दर्शन से ये परदेशी क्रान्तिकारी विशेष प्रभावित हुये, और मार्क्सवादी क्रान्तिदर्शन को भारतीय रंग देने लगे। भारत का उग्रवाद इस प्रकार मार्क्स की सामाजिक क्रान्ति की छाया में पलने लगा।

क्रान्तिकारियों की अगली पीढ़ी पर इस दर्शन का विशेष प्रभाव रहा। इस प्रकार भारत के सशस्त्र क्रान्ति आंदोलन ने कृति के रूप में उग्रवादी आक्रमणात्मक नीति को अपनाने के पीछे कई कारण बताये जा सकते हैं।

१, बंग विभाजन -- सन १९०५ में बंगाल के वायसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किया। इस विभाजन ने उग्र राजनीतिक विचारधारा को सशक्त बनाने में विशेष योगदान दिया।

२, प्रथम विश्व युद्ध — १९१४ में शुरू हुये प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्यशाही को जबरदस्त आघात पहुँचा। इस युद्ध में अंग्रेजों ने भारतीय संपत्ति का बढ़कर प्रयोग किया। परिणाम यह हुआ कि देश में वस्तु की महँगाई आयी। इससे जनता का असंतोष और भी अधिक भड़क उठा।

३, रूसी क्रान्ति — १९१७ के अक्तूबर में रूस में जार की साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध सर्वहारा वर्ग ने मिलकर विद्रोह किया। मार्क्सवादी रूसी नेता लेनिन के नेतृत्व में इस संगठित विद्रोह में ये जार के साम्राज्यवाद को नष्ट किया और सर्वहारा वर्ग का राज्य रूस में स्थापित हुआ।

इस अद्भुत क्रान्ति से समूची दुनिया प्रभावित हुई। साम्राज्यवादी ब्रिटिशों का विरोध करने के लिए हमारे देश के क्रान्तिकारीयों ने प्रेरक शक्ति के रूप में इसी रूसी क्रान्ति का स्वागत किया।

४. रोलेट ॲक्ट :-- अंग्रेज सरकार ने १८ मार्च १९१९ को "रोलेट ॲक्ट" पास किया। इस में सरकार को किसी भी वक्त, चाहे किसी को भी गिरफतार करने का हक दिया गया, और पुलिस के हाथों में सारे अधिकार सौंप दिये गये। इस कानून के विरोध में सारे देश में ६ अप्रैल १९१९ को देशव्यापी सत्याग्रह हुआ। इसी समय "जालियांवाला हत्याकांड" हुआ। आंदोलन तीव्र और कुछ जगहों में हिंसक हो गया। यह देखकर अहिंसावादी नेता महात्मा गांधीजीने आंदोलन बंद करनेका निर्णय लिया। इससे आंदोलन कारियों में नाराजी फैल गयी। विशेषतः खौलते खूनवाले देश के नौजवान अधिक नाराज हुऐ। गांधीजी के नेतृत्वपर उनका विश्वास लडखडाने लगा।

५. किसान आंदोलन -- १९२० से १९२२ इन दो वर्षों में कांग्रेस ने देशव्यापी किसान आंदोलन खडा किया। युक्त प्रान्त के "चौरी चौरा" तहसील में किसानो के एक शान्तिपूर्ण जुलुस पर पुलिस ने अमानुषिक हमला किया। इसमे २६ लोग मारे गयें। इस हमले के उत्तर में किसानोंने भी पुलिस चौकी को आग लगाई, जिस में २१ पुलिस जिन्दा जला दिए गये। इस अहिंसा को देखकर फिर एक बार गांधीजी ने आपनी अहिंसा की सनक में इस आंदोलन को रोक दिया। इसपर कांग्रेसी नेताओं को भी क्षोभ हुआ। इस देश में व्याप्त क्रान्ति की भावना को बडी ठेस पहुँची। इस

पर मन्मथनाथ गुप्तजी कहते हैं -- "संसार में इस समय सर्वत्र क्रान्तिकारी शक्तियाँ प्रबल हो रही थी, भारत वर्ष में भी उसकी अभिव्यक्ति हो रही थी। इस हालत में अहिंसा के बहाने से इस आंदोलन को रोककर गांधीजीने वाकई हिमालय के समान गलती की।" [१]

इस प्रकार १९२२ तक आते आते रूसी क्रान्ति, मजदूरों की हडतालों, देश के विविध भागों में घटित किसान आंदोलनों आदि के प्रभावों से प्रभावित "सामाजिक क्रान्ति आंदोलन" गांधी प्रणीत कांग्रेस के "असहयोग आंदोलन" के विरोध मे खडा हुआ। इस क्रान्ति के लिए साधन के रूप में पिस्तौल, बम तथा अन्य हाथियार रहें। अंग्रजो के साम्राज्यवाद का निर्मूलन करना इस क्रान्ति का लक्ष्य रहा। विशेषत: उत्तर भारत में इन विचारों को एक संगठनात्मक रूप देनेके प्रयत्न जारी थे।

— नेशनल कालिज —

देश के नौजवानों में राष्ट्रिय भावना बनाए रखकर अंग्रेजो को इस देश से हटाने के प्रवृत्त करने के उद्देश्य से पंजाब केसरी लाजपतरायजी ने लाहोर में "नेशनल कालिज की स्थापना की। विशेषत: पंजाब, प्रांत के नौजवान इस कालिज के छात्र रहें, जिन में भगवतीचरण, भगत सिंग, सुखदेव, यशपाल और धन्वंतरी छात्र उग्रवादी विचारों के थे। कालिज के इतिहास के प्रोफेसर जयचंद्र विद्यालंकारजी की प्रेरणा से इन युवको ने गांधीजी के सत्याग्रह

१. भारतीय क्रान्तिकारी आंदोलन का इतिहास : ले. मन्मथनाथ गुप्त पृष्ठ २२५ संस्करण १९७२.

आंदोलन की विफलता के अनुभवों के विरोध में सशस्त्र क्रांति का श्रीगणेश किया। इसी समय "काकोरी कांड" के महत्वपूर्ण फरार क्रान्तिकारी चंद्रशेखर आजाद युक्त प्रांत मे संगठन बनानेकी कोशिश में थे। इस कालिज के छात्रों ने निम्न पुस्तकों का अध्ययन किया था -- डान ब्रीन की " माय फाइट फार आयरिश फ्रीडम", मैजिनी और गैरीबाल्डी की जीवनियां", "फ्रेंच राज्यक्रांति का इतिहास", "वाल्टेयर और रूसो के क्रान्तिकारी विचार", "रूसी क्रान्तिकारी वीरा और फिग्नर की जीवनियाँ", "सन्याल दादा की आत्मकहानी" और "भारत के स्वातंत्र्य आंदोलन के क्रान्तिकारी प्रयत्न"।

अंग्रेजों की बढती दमन नीति, असहयोग आंदोलन की असफलता और कालिज के राष्ट्रीय संस्कारों से प्रभावित नौजवानों ने अपने विद्रोभ की अभिव्यक्ति के लिए आतंकवाद का सहारा लिया। महायुध्द के समय के कई विश्रृंखल संगठनों को ए संबंध -सूत्र में पिरोने का कार्य युक्त प्रान्त में आजाद कर रहे थे। डा. एन. रविन्द्रनाथ कहते हैं, "इन आतंकवादियों का उद्देश्य था देशको स्वतंत्र कर समाजवादी प्रजातंत्र की स्थापना, साधन था शस्त्र, हिंसा, बमबारी, लुट-डकैती, दल की सदस्यता का आधार था उद्देश्य पूर्ति के लिए हँसते हँसते मर मिटने की अदम्य चाह और दल का सब से बडा नियम था कडे से कडा अनुशासन।" [१]

नौजवान भारत सभा :-- सन १९२५ में लहोर में " नौजवान भारत सभा" की स्थापना करके आतंकवादी संगठन को सुसंगठित रूप दिया गया।

---

१. मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास:डा. एन.रविन्द्रनाथ पृष्ठ ८६ संस्करण - १९७६.

जनता में उग्र राष्ट्रीय भावना जागृत करना इस सभा का प्रमुख उद्देश्य रहा। सभा का कार्यकारी मंडल इस प्रकार का था, - "भगतसिंग - सेक्रेटरी, भगवती चरण - प्रोपागंडा सक्रेटरी, इसके साथ सार्वजनिक क्षेत्र में सहयोग देनेवाले लोग थे, एहसान इलाही, धन्वंतरी, पिंडीदास सोंढी आदि।" [१] पंजाब के लगभग सभी क्रांतिकारी, रामचंद्र कपूर, सुखदेव, यशपाल आदि इस सभा के सदस्य थे। इस सभा की योजनाओं को डॉ. सैफुद्दीन, डॉ. सन्याल, केदारनाथजी जैसे वामपक्षी कांग्रेसजनों का भी समर्थन मिला।

गांधीवादी कांग्रेस की समझौतावादी नीति की आलोचना करके जनता में क्रान्तिकारी आंदोलन के लिए सहानुभूति पैदा करना इस सभा का कार्य था। इस सभा ने प्रगतिशील और समाजवादी क्रान्तिकारी विचारों के प्रचार में काफी योग दिया।

रूढिवाद और सांप्रदायिकता के अंधविश्वास को दूर करना इस सभा का कार्य था। इस कार्य की इस सभा की घोषणाएँ अलग थी। "हम लोग "अल्ला हो अकबर", "सत श्री अकाल" और "हर हर महादेव" के नारे एक साथ नहीं लगाते थे। हमारे केवल तीन नारे थे - "इन्कलाब जिंदाबाद", "वन्दे मातरम्" और "हिन्दुस्तान जिन्दाबाद"। [२] विविध व्याख्यानों द्वारा समाज को वैज्ञानिक भौतिकवाद का परिचय देना और सांप्रदायिक आदर्शवाद का मिथ्यापन लोगों को समझा देना यह कार्य इस सभा का विशेष कार्य था।

---

१. सिंहावलोकन : भाग १ यशपाल - पृष्ठ ९५ संस्करण - १९७८.
२. सिंहावलोकन : भाग १ यशपाल - पृष्ठ ९६ संस्करण - १९७८.

इस सभा का कोई भी सनसनीखेज कार्य न होता देख सभा के सभी सदस्य गजब के निराश थे। भगतसिंग तो कुछ कार्य बनता न देख छोड़कर दिल्ली आये, और किसी वृत्तपत्र में व्यवसाय करने लगे। फिर वहाँ से कानपुर गये। कानपुर में भगत सिंग का मेलजोल युक्त प्रान्त के क्रान्तिकारी दल " हिन्दुस्तान रिपब्लिक सेना" के साथ बढ़ा। इस दल ने काकोरी के समीप की, राजनैतिक डकैती भी भगत सिंग के मन में एक नया और क्रियात्मक क्रान्तिकारी संगठन साकार कर रही थी।

भगत सिंग कानपुर से फिर वापस दिल्ली आये। कानपुर में पाये हुये सूत्रों के आधार पर वे दिल्ली मे संगठन बनानेकी चेष्टा करने लगे। इधर " नौजवान भारत सभा" के अन्य सदस्य सुखदेव , जयचंद्र और भगवतीचरण भी बेचैनी अनुभव कर रहे थे। सभी क्रान्तिकारी किसी नये और दृढ संगठन की तलाश में थे। चंद्रशेखर आजाद भी इन बिखरे सूत्रों को एक जगह बाँधकर एक नया संगठन बनानेके प्रयत्न में थे।

--- हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना ---

भगतसिंग, सुखदेव, विजय और शिव वर्मा के प्रयत्नों से उत्तर भारत के सभी प्रन्तों के क्रान्तिकारी प्रतिनिधियों की एक बैन्क की योजना दिल्ली में की गयी थी। यह बैठक और ९ सितंबर १९२८ को फिरोजशाह किले के खण्डहरों में हुई थी। इस बैन्क में पंजाब से सुखदेव और भगत सिंग, राजपुताना से कुन्दनलाल युक्त प्रान्त से शिव वर्मा, ब्रह्मदत्त मिश्र, जयदेव कपूर, विजयकुमार सिन्हा, सुरेन्द्र पांडे और बिहार से फणीन्द्रनाथ घोष और मनमोहन बॅनर्जी आये थे। इस सभा में सशस्त्र क्रांतिकारी प्रयत्न

के लिए आंतर प्रांतीय आधार बनाया गया। सभी प्रान्तों से प्रतिनिधि लेकर एक केंद्रीय समिति बनायी गयी। अबतक भिन्न भिन्न प्रान्तो मे क्रान्तिकारी दलों के अपने अपने पृथक नाम थे। बंगाल और बिहार में "अनुशीलन" और "युगांतर" समितियाँ, युक्त प्रांत में "हिन्दुस्तान प्रजातंत्र सेना", और " बनारस "रिवोल्युशनरी पार्टी " इन सभी को मिला करके इस दिल्ली बैठक में पूरे संगठन का नाम "हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना" रखा गया।" [१]

इस संगठन का कार्यकारी मंडल इस प्रकार का था - "विजयकुमार सिन्हा और भगत सिंग पर अतप्रान्तीय संबंध बनाए रखनेका उत्तरदायित्व दिया गया। सुखदेव को पंजाब, शिव वर्मा को युक्त प्रजा, कुन्दलाल को राजपुताना, फणीन्द्रनाथ को बिहार का प्रतिनिधी और संगठन कर्ता स्वीकार किया गया। हथियारों और कोष की कमी के कारण यह निश्चय किया गया कि हथियार और कोण पूर्णत: केंद्रीय समिति के हाथ में रहे।" [२]

चंद्रशेखर आजाद जैसे अनुभवी और शस्त्रों के ज्ञाता को दल का [हि.स.प्र.स.] कमांडर-इन-चीफ बनाया गया।

अपने इस संगठन के शीर्षक में "समाजवादी" या "सोशालिस्ट" शब्द जोडनेकी इच्छाही क्रान्तिकारी आंदोलन का "मार्क्सवाद" की ओर झुकाव सिध्द करती है। इन लोगों को मार्क्स का "वैज्ञानिक भौतिकवाद" समझे या न समझे, परंतु मूक, शोषित जनता के लिए बलिदान करना ये आतंकवादी अपने जीवन का परम कर्तव्य समझते थे।

---

१. सिंहावलोकन : भाग १ - यशपाल पृष्ठ १३७, संस्करण १९७८.
२. सिंहावलोकन : भाग १ - यशपाल, पृष्ठ १३९. संस्करण १९७८.

इस क्रान्ति-कार्य के लिए कुछ बातें दिल्ली की सभा में ही निश्चित हो चुकी थी।

१. सशस्त्र क्रान्ति का काम आगे बढाने के लिए धन की आवश्यकता होगी। उसे पूरी करने के लिए डकैतियाँ करनी होगी। डकैतियाँ जहाँतक संभव हो डाकखाने, सरकारी बँको और खजानों की ही की जाएँ।

२. ऐसे मामलों में धन और शक्ति खर्च की जाएगी जिनका सार्वजनिक और राजनीतिक महत्व हो।

३. कोई भी कार्य [Action] करने से पहले सात आदमियों की केन्द्रीय समिति में उसपर विचार किया जाएगा।

---"हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना" का देश कार्य --

१. सांडर्स वध -- [सन १९२८]

साइमन कमिशन का विरोध सारे देश में हो रहा था। लहोर में " नौजवान भारत सभा" द्वारा निकाले गये साइमन विरोधी जुलूस का नेतृत्व पंजाब केसरी लाला लाजपतराय कर रहे थे। नौजवान भारत सभा के कुछ स्वयंसेवक वृध्द लालाजी पर छाता ताने "साइमन गो बँक " के नारे लगा रहे थे। स्टेशनपर आते आते भीड इतनी बढ गयी कि पीछे लौटने के लिए भी जगह नही रही थी। पुलिस ने अचानक लाठीचार्ज शुरू करके भीड को भगाना शुरु किया। लालाजी जिस बाजू पर थे वह बाजू न टूटती देख पुलिस सुपरिटेंडेंट स्काट ने इस बाजू की टोलीपर हमला करनेका आदेश दिया। डी.एस.पी. सांन्डर्स स्वयं एक छोटी लाठी हाथ में लेकर सिपाहियों के साथ इस टोलीपर टूट पडा। उसकी एक लाठी लालाजी के कंधेपर गहरी चोट आयी।

असंख्य चोटों से घायल वृध्द लालाजी का १७ नवम्बर १९२८ को दर्दनाक अंत हुआ। समूचा देश इस घटना से शोक विव्हल हो गया।

"हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ" की एक बैठक इस प्रसंगपर विचार करने के लिए दिसंबर २८ के प्रथम सप्ताह में लाहौर के मजंग मुहल्ले में बुलाई गयी। इस बैठक में भगत सिंग के सुझाव के अनुसार लालाजी पर किये इस पुलिस हमले का बदला लेने का फैसला "हिंसप्रस" की केन्द्रीय समिति ने किया। लालाजी के हत्यारों की हत्या करना ही समिति का प्रधान लक्ष्य रहा।

इतिहास कहता है, "हिंसप्रस" ने स्काट को गोली मारने का फैसला किया था, परंतु भूल से गोली साण्डर्स को मार दी गयी। यशपालजी ने इस बातको नामंजूर किया है। वे कहते हैं -- " लालाजीपर लाठी चलाने का हुक्म स्काटने दिया था, लाठी साण्डर्स ने मारी थी। हिंसप्रस को इनमें से किसी के प्रति व्यक्तिगत पक्षपात नहीं था। गोली मारने का प्रयोजन एक ही था और दोनों ही इसके अधिकारी थे। दोनों में भ्रम होने का कोई अवसर नहीं था।" [१] स्काट उन दो/तीन दिनों में लाहौर में मौजूद नहीं था। उसकी यह गैरमौजूदकी ही मौत के व्दार से उसे बचा लाई।

साण्डर्स और स्काट के आने जाने के रास्तेपर कई दिनों से निगरानी रखी गयी। १७ दिसंबर १९२८ यह दिन गोली अभियान के लिए निश्चित किया गया। जय गोपाल, भगत सिंग, राजगुरु और चंद्रशेखर आजाद ये चार क्रान्तिकारी पुलिस कचहरी के पास साण्डर्स की राह में खडे रहे। साण्डर्स अपनी लाल मोटार साइकिल से आता जाता था। साण्डर्स बाहर जाने के लिए कचहरी के फाटक तक जैसे ही पहुँचा जय गोपाल ने, जो साइकिल दुरुस्त करने के बहाने

---

१. सिंहावलोकन प्रथम भाग : यशपाल - पृ.१४१ संस्करण १९७८.

उसपर निगरानी करता पहले से ही खड़ा था , राजगुरु और भगत सिंग को संकेत किया। संकेत मिलते ही राजगुरु ने पहली गोली दाग दी जो सीधी साण्डर्स की गर्दन में ही घुसी। भगत सिंग ने तेजी से उसपर और दो/चार गोलियाँ दागकर उसे पूरा ठण्डा कर दिया। इधर आजाद डी.ए.वी. कालिज के जंगल के भीतर खड़े थे। सांडर्स को ठंडा करने के बाद जैसे ही भगतसिंग और राजगुरु डी.ए.वी. कालिज की ओर मुड़े, एक हेड कान्स्टेबुल चंदन सिंग उनपर झपटा। आजाद ने अपना माउजर पिस्तौल दिखाकर उसे धमकाया लेकिन उसने नही माना तो उसे भी ठण्डा करना पड़ा। सभी क्रान्तिकारी डी.ए.वी. कालिज होस्टल से होकर अजंग मोहल्ले में घुस गये।

इस गोलीकाण्ड से सारे लाहौर में सनसनी फैल गयी। दूसरे ही दिन कुछ लाल अंग्रजी पर्चे बाटें गये और जगह जगह चिपके मिले। पर्चे की प्रथम पंक्ति इस प्रकार थी -- " जे.पी. साण्डर्स की मृत्यु से लाला लाजपतराय की हत्या का बदला लिया गया। " [१] पर्चे की अंतिम पंक्ति इस प्रकार थी , " मनुष्य का रक्त बहाने के लिए हमें खेद है, परंतु क्रान्ति की बलिवेदी पर रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता है। हमारा उद्देश्य ऐसी क्रान्ति से है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत कर देगी। " [२]

"हिंसप्रस" की उपर्युक्त घोषणा से यह स्पष्ट होता है कि आतंकवाद और क्रान्ति का अर्थ इन लोगों ने बहुत ही सोचसमझ कर लगाया था। आतंकवाद का मतलब नक्सलवाद नही था। मनुष्य के द्वारा किये मनुष्य के शोषण को सामूहिक सशस्त्र क्रान्ति से रोकना इनका प्रमुख उद्देश्य था।

---

१. सिंहावलोकन भाग १ : यशपाल : पृष्ठ १५२ संस्करण १९७८.
२. सिंहावलोकन भाग १ : यशपाल : पृष्ठ १५३ संस्करण १९७८.

२. : असेम्बली बम – विस्फोट

सन १९२९ के पूर्व लोकसभा को केंद्रीय असेम्बली के नाम से समझा जाता था। साण्डर्स वध के पश्चात १९२९ में "हिंसप्रस" ने केंद्रीय असेम्बली में बम फेंककर अपनी निति और दल के कार्यक्रम को और अधिक समाजभिमुख बनानेकी कोशिश की। इस योजना को यशपाल स्वयं "हिंसप्रस" कीनीति और कार्यक्रम का मुँहबोलता उदाहरण मानते हैं।

उस समय की केन्द्रीय विधान सभा में अंग्रज सरकार दो नये दमनकारी कानून बनाने के प्रयत्न में थी। एक था "सार्वजनिक सुरक्षा कानून" [Public Safty Bill] और दसरा था "औद्योगिक विवाद कानून" [Traders' Dispute Bill] पहले कानून से सरकार को जिस किसी को भी और कहीं भी बिना पूछताछ किए गिरफ्तार करनेका हक मिलनेवाला था, और दूसरे कानून से मजदूरों की मांगे और हड़ताल के अधिकार को छीन लिया था।

असेम्बली में इनपर काफी विवाद होनेपर भी ये बहुमत से नामंजूर होनेवाले थे, परंतु इन्हें वाइसराय की विशेष आज्ञा से कानून बना दिये जाने की संभावना थी। ये दोनो कानून जनता में बढ़ती जाती स्वतंत्रता की भावना को कुचल देने के प्रयोजन से बनाए गये थे।

"हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ" की केंद्रीय समिति ने निश्चय किया कि जिस समय ये बिल विरोधों के बावजूद भी कानून बन जायेंगे तब केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंक कर सरकार की दमनकारी नीति के प्रति विरोध प्रकट करें। इस अवसान में "हिंसप्रस" ने बम फेंकने को अपनी बात कह सकने का अवसर समझा न कि बम विस्फोट से किसी की जान लेना।

इस कार्य के लिए भगत सिंग, बटुकेश्वर दत्त, और जयदेव कपूर की नियुक्ति की। बम फेंककर बम फेंकनेवाले स्वयं को बचाने की कोशिश न करे। यह आदेश उन्हें मिला हुआ था।

८ अप्रैल १९२९ के दिन इन बिलों को वायसराय की विशेष आज्ञा से कानून बना दिये जाने की घोषणा होनेवाली थी। उस समय सरकारी दल के नेता होम मिनिस्टर, सर जान शुस्टर और विरोधी दल के नेता पं. मोतिलाल नेहरू, विठ्ठलभाई पटेल आदि लोग थे।

जैसे ही जान शुस्टर अधिकृत रीति से कानून बनाए जाने को घोषणा करने के लिए खडे हुए, विधान सभामें उपस्थित हिंसप्रस के दूसरे साथी भवन से बाहर निकल गये। शुस्टर के उठते ही भगत सिंग और दत्त भी अपनी अपनी जगहों पर उठ खडे हुवे। प्रथम भगत सिंग ने एक बम शुस्टर के पीछे फेंक दिया, उसी जगह दुसरा बम बटुकेश्वर दत्तने भी फेंक दिया। बम के भयानक धमाके के कारण सारा भवन दहल उठा। सभी लोग डर के मारे हक्के बक्के ही रह गये। भगत सिंग ने जान शुस्ट पर दो गोलियाँ चलाई पर वे डेस्क के नीचे छिप जाने से बच गये।

" इन्कलाब झिन्दाबाद। "

" साम्राज्यवाद का नाश हो। "

" दुनिया के मजदूरों एक हो ! ! ! "

ये नारे लगाते हुवे दोनों ने "हिंसप्रस" के लाल पत्र हाल में फेंक दिये।

"बहरों के सुनने के लिए विस्फोट के बहुत ऊँचे शब्दों की आवश्यकता होती है। "[१] इस वाक्यसे शुरुआत कर पर्चेमें यह सिध्द किया गया था कि अंग्रेज सरकार अपनी दमनकारी नीति का अमल इस देश की गरीब जनता पर कितनी क्रूरता से करती है। "हिंसप्रस" ने अपने उद्देश्य को इस पर्चे मे स्पष्ट किया है, " हम मानव रक्त बहाने के लिए अपनी विवशता के लिए दुःखी हैं परंतु क्रान्ति व्दारा सब को समान स्वतंत्रता देने और मनुष्य व्दारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रान्ति में कुछ न कुछ रक्तपात अनिवार्य है।

इन्कलाब जिन्दाबाद। " [२]

भगतसिंग और बटुकेश्वर दत्त ने इस प्रकार भागने के लिए और दूसरोंकी जान लेने के लिए मौका रहनेपर भी अपने आपको पुलिस के हाथों में सौंप दिया। पुलिस व्दारा उन्हें गिरफतार किया गया। उनपर असेम्बली में बम फेंककर नरहत्या करने की चेष्टा का अभियोग लगाया गया। जज ने उन्हें उम्रकैद का दण्ड दिया।

३. लाहौर में बम निर्माण का कार्य --

क्रान्ति कार्य के लिए शस्त्रों और बमों की अत्यंत आवश्यकता थी। सुखदेव ने लाहौर में कश्मिरी बिल्डिंग के मकान में ही "बम फैक्टरी" का सरंजाम जुटाकर बम बनानेका कार्य प्रारंभ किया था। इस काम में सुखदेव के साथ यशपाल, शिव शर्मा, जय गोपाल, किशोरी लाल, आदि लोग थे। दुर्भाग्य यह रहा कि अप्रैल १३

---

१. सिंहावलोकन प्रथम भाग : यशपाल : पृष्ठ १७४ सं. १९७८.
२. सिंहावलोकन प्रथम भाग : यशपाल : पृष्ठ १७५ सं. १९७८.

सन १९२९ को यह फैक्टरी पकडी गयी , और हिंसप्रस के सभी साथी - सिवा यशपाल के, पकडे गये।

सुखदेव की उतावली मन:स्थिति के कारण यह कार्य व्यर्थ हो गया और इसी प्रसंग के कारण ही पुलिस को साण्डर्स वध तथा असेम्बली बम विस्फोट के रहस्यों का पता लगा ॥

४. सहारनपुर का बम बनानेका कार्य —

"हिंसप्रस" के सभी महत्वपूर्ण साथी पकडे गये थे। लाहौर बम फैक्टरी में पकडे कुछ साथी मुखबिर बन जाने के कारण बाहरी साथियों पर फरार होने की नौबत आ गयी थी। पुलिस से छिपकर क्रान्तिकार्य करने की जिम्मेदारी आजाद, यशपाल, भगवतीचरण, जयदेव कपूर, शिव वर्मा, धन्वंतरी, इंन्द्रपाल आदि पर आयी थी।

बिहार में सहारनपुर की लकडमंडी में डॉ. निगम का एक छोटा अस्पताल था। इसी अस्पताल में बम बनाने का कार्य शुरू हुआ। इस फैक्टरी को भी पुलिस द्वारा पकडा गया और डॉ. निगम, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, गया प्रसाद आदि पकडे गये। सहारनपुर फैक्टरी का संबंध पुलिस , लाहौर बम फैक्टरी, असेम्बली बम कांड और साण्डर्स वध के प्रकरणों से जोडने के लिए प्रमाण जुटा रही थी। फणीन्द्र घोष नामक एक मुखबिर ने पुलिस को सभी क्रान्तिकारियों का पता बताया। उसके बयानपर ही सभी महत्वपूर्ण साथियों को फाँसी की सजा हो गयी। उसकी इस गद्दारी के कारण एक क्रान्तिकारी वैकुंठ शुक्ल ने उसका कत्ल किया।

अपनी फरार अवस्था में अथक परिश्रम करके यशपाल ने अपने साथी भगवतीचरण, सेनापति आझाद , इन्द्रपाल आदि की सहायता से दिल्ली और रोहतक में बम निर्माण किए। इन बमों के आधार पर उनका अगला क्रान्तिकार्य जारी रहा। इस क्रान्तिकार्य मे यशपाल की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

५. वाइसराय की गाडी के नीचे बम-विस्फोट

तेहखंड में वाइसराय की गाडी के नीचे बम विस्फोट करने की यशपाल, भगवतीचरण और इन्द्रपाल की योजना विफल हो चुकी थी। दिसम्बर १९२९ के तीसरे सप्ताह में वाइसराय कोल्हापुर जानेवाला था, और दिसम्बर २३ को दिल्ली लौटने का उसका कार्यक्रम था। उसी दिन दिल्ली में गांधीजी वाइसराय से भेंट करनेवाले थे। वाइसराय पर आक्रमण करने का यही मौका था।

२२ दिसम्बर की शाम पांच बजे निजामुद्दीन और दिल्ली स्टेशनों के बीच, नयी दिल्ली से केवल चार-पांच मील दूर कौरव-पांडवों के किलेके खण्डहरों के समीप रेल्वे लाईन के नीचे इन्द्रपाल ने बम गाड दिये। हंसराज का सूक्ष्म बिजली का कनेक्शन [५०० गजी] उसे जोडकर तैयार रखा। दल के विरोध को ताक पर रखकर यशपाल और इन्द्रपाल अपनी ड्यूटीपर दूसरे दिन सुबह ४।। बजे ही निकले। मोटर साइकिल से नियत स्थलपर गये और गाडी का इन्तजार करने लगे। पटरी से ५०० फूट की दूरीपर वे किसी झुरमुट में छिप गये। घना कोहरा होने के कारण सारा कार्य अंदाजेसे ही करना पडता था। कोहरे केकारण सामने से गुजरा पायलट इंजिन भी वे पहचान न सके। नियत समय पर मथुरा की ओर से गाडी आयी। इंजन का लाइट भी कोहरे के कारण वे देख नहीं सके। अपनी समझ के अनुसार यशपाल ने सांस रोक कर सिर्फ इंजन की आहट से ही बटन दबा दिया।

प्रचंड धमाके के साथ विस्फोट हुआ। निशाना गलत हुआ। गाडी लुढक जाने के बजाय आगे ही निकल गयी। इस प्रयत्न में वाइसराय बाल बाल बच निकले। यशपाल के क्रान्तिकारी जीवन का यह कार्य निश्चितही बहुत जोखिमभरा रहा है।

६. गडोदिया स्टोर पर डाका

प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी भगवतीचरण अकस्मात हुए एक बम-विस्फोट में मर गये। उनके मर जाने से दल का आर्थिक आधार ही टूट गया। निरंतर बढ़ते कोर्ट-खर्च और नये हथियार खरीदने में "हिंसप्रस" का पैसा समाप्त हो गया। आर्थिक कठिनाई बहुत बढ़ गयी। मजबूर होकर चंद्रशेखर आजाद ने दिल्ली के चाँदनी चौक में स्थित "गडोदिया स्टोर" पर डाका डालनेकी योजना बनायी। आजाद, विद्याभूषण, काशीराम, धन्वंतरी और भगवतीराम आदि इस मनी एक्शन मे थे। ऐन दोपहर के समय केवल पिस्तोल दिखाकर ही आजाद ने ३/४ मिनटों में सत्राह हजार तीन सौ रुपये हस्तगत किये। इस डकैती में प्राप्त रुपया न्यू हिन्दू होस्टल में प्रो. निगम के पास रखा गया और फिर उसका बँटवारा आवश्यकता के अनुसार किया गया।

७. दिल्ली की बम फैक्टरी

गडोदिया स्टोर में प्राप्त बहुतसे रुपयोंका बहुत बड़ा हिस्सा दिल्ली में खोली बम फैक्टरी के लिए रखा गया। दिल्ली में कैलाशपति और कानपुर में वीरभद्र पर यह जिम्मेदारी रही। बमों के खोल बनाने का कारखाना कानपुर में और बमों का मसाला बनाने का कारखाना दिल्ली में शुरू करने की योजना थी।

इतनी प्रचुर मात्रा में बम बनाने के पीछे "हिंसप्रस" का एक विशिष्ट उद्देश्य था। "बम इतनी संख्या में बन सकें कि हमारे प्रयत्न इक्के दुक्के आतंकवादी कार्योंतक ही सीमित न रहें, बल्कि गोरिल्ला दलों के आक्रमण का रूप ले सकें।" [१]

---

१. सिंहावलोकन भाग १ : यशपाल : पृष्ठ १९९ संस्करण -१९७८

इस कार्य में बम का मसाला तैयार करने की जानकारी रखानेवाले सिर्फ दो ही क्रान्तिकारी थे - एक यशपाल और दूसरे वात्स्यायन। कार्य शुरू हुआ। कार्य के साथ आपसी मतभेद भी बढते लगे। पैसों की फिजूल खर्ची के आरोप क्रान्तिकारी, एक दूसरों पर लगाने लगे। धान्वंतरी, कैलाशपति और सुखदेवराज इन लोगोंने यशपाल की झूठी शिकायतें सेनापति चंद्र शेखर आजाद से की, और यशपाल को शूट करनेका झूठा षड्यंत्र रचा। इस आपसी फूट के कारण दिल्ली की बम फैक्टरी विशेष कारगर सिध्द नहीं हुई। यदि यह बम फैक्टरी आपसी फूट के बिना जारी रहती तो निश्चय ही १८५७ के विद्रोह का एक छोटा रूप प्रकाश मे आता और इतिहास में "हिंसप्रस" का यह कार्य बडा ही महनीय होता। इसी फूट के कारण दल का अखंडित्व भंग होने की नौबत आयी।

— दल भंग —

यशपाल पर "प्रकाशवती" के संबंधो के बारे में लगाई गयी तोहमत वापस ली गयी। मृत्युदंड का षड्यंत्र समाप्त हुआ। धान्वंतरी को सुखदेवराज पर विशेष विश्वास था। यशपाल के साथ पंजाब में कोई एक्शन करने के लिए वह तैयार नहीं था। आखिर दोनों का यह विवाद केंद्रीय समिति [आजाद] के सामने पेश किया गया दोनों ने भी अपनी अपनी लीक नहीं छोडी। अंत में ४ दिसंबर १९३० को इस दिल्ली बम फैक्टरी की बैठक में आजाद ने " हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना [संघ]" की केंद्रीय समिति को भंग कर दिया। केंद्रीय समिति को तोड देने का मूल कारण यशपाल को गोली मारने के निर्णय का बदल दिया जाना ही था, क्यो कि इस निर्णय के बदल दिये जाने से ही दल में ऐसी समस्याएँ निर्माण हुई कि दल को एक बार तोड देना ही अनिवार्य हो गया। एक ओर धन्वंतरी और सुखदेवराज तो

दूसरी ओर यशपाल और इन्द्रपाल। दोनों भी पार्टियाँ अपने मत को पार्टी के अनुशासन से भी महत्वपूर्ण समझने लगीं थीं। दल टूटनेपर आजाद ने हथियारों का बँटवारा किया। आजाद का यशपालपर विशेष प्रेम था। यशपालजी लिखते है -- " भैयाने बिहार, यू.पी., पंजाब, दिल्ली, मध्य प्रांत, महाराष्ट्र और मेरे लिए हथियार बराबर बराबर बाँट दिये। मैं इसी समय किसी प्रान्तका प्रतिनिधि नही था, परंतु उन्होंने अपने निर्णय से मुझे बराबर का हिस्सा देने के बाद एक अच्छा रिवाल्वर और भी दिया था और द्रवित स्वर मे कहा, "सोहन को हथियार देना लोगों को अनुचित लगेगा परंतु मैं जो उचित समझता हूँ, कर रहा हूँ। दूसरे लोग जाने हथियार का क्या करेंगे लेकिन सोहन जरुर उनका उपयोग करेगा।"[1]

दल भंग होने के और भी कई कारण बताए जा सकते है --

१. भगत सिंग, सुखदेव, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त जैसे दल के महत्वपूर्ण आधार स्तंभ मृत्युकी शैयापर थे। कम से कम दल के अनुशासन के लिए भगत सिंग का बाहर होना आवश्यक था।

२. दल का नाम "हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना" था, परंतु संगठन गुप्त होने के कारण एक गुट के रूप में ही था। वास्तव में इस में प्रजातंत्रात्मकता का अभाव ही था। जब प्रजातंत्रात्मक कसोटीपर दल की समस्याएँ सुलझानी पडीं, तब उसे भंग ही करना पडा।

३. दल के नेता " चंद्रशेखर आजाद " थे परंतु वे सिपाही वृत्ति के थे। उन्हे व्यक्ति की परख कम ही थी। जो चापलूसी करें उनकी वे सुनते थे।

---

१. सिंहावलोकन : भाग २ : यशपाल : पृष्ठ २३५ संस्करण १९७७

४. इस दल को व्यापक सामाजिक आधार नहीं था, जो राष्ट्रिय कांग्रेस और मुस्लिम लीग को मिलता था। लोग पैसा देकर इनकी सहायता नहीं करते थे। धन की प्राप्ति के लिए इन्हें मजबूरन डकैतियों का सहारा लेना पडता था। इससे इनकी बदनामी ही होती थी।

५. देश के प्रधान नेता गांधीजी और उनके अनुयायी इन देशभक्तों के कार्य को हिंसक और राष्ट्रद्रोहात्मक समझकर इनकी खुल आम निन्दा करते थे।

६. क्रान्तिकारियों के सामने ठोस कार्यक्रमों का सर्वदा अभाव था। उनका कार्यक्रम "मनी, मैन और आर्म्स" बताया जाता था।

दल भंग हो गया इसका मतलब ऐसा नहीं कि दल के क्रान्तिकार्य बन्द हो गया। आजाद ने " केन्द्रिय समिति" का निर्णय का अधिकार तोड दिया , और हर एक प्रांत में स्वतंत्र कार्य करने के अधिकार साथियों को दे दिये। दल तोडते के पीछे उनका यह भी प्रयोजन था कि दल नये, सिरे से, नये आधार पर बन सके। आजाद ही दल के प्रमुख थे। आजाद अपने क्षेत्र में कुछ क्रान्तिकार्य करने की सोच रहे थे।

धन की विकट समस्या को सुलझाने के उद्देश्य से आजाद और उनके साथियों ने कानपुर में डकैती की परंतु हाथ में विशेष कुछ भी नहीं लगा।

१९३० के दिसंबर के अंतिम सप्ताह में पंजाब युनिवर्सिटी के कन्वोकेशन समारोह में उपस्थित पंजाब के गवर्नर पर गोली चलानेका प्रयत्न हुआ। वह प्रयत्न भी बेकार सिध्द हुआ।

-- आजाद की शहादत --

एक ओर दल तितर -बितर हो चुका था, तो दूसरी ओर आजाद उन टुकडों को जोडकर फिर नये सिरे से दल की निर्मिति में लगे हुअे थे। उनके प्रयत्नों को यश न के बराबर ही था। २७ फरवरी १९३१ के दिन अपने एक साथी से मिलने आजाद इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क गये थे। वहींपर पुलिस को उनके होने की खबर मिली। पुलिस के आते ही आजाद उनपर गोलियाँ बरसाने लगे। पुलिस के साथ हुअी इस मुठ भेड में आजाद शहीद हुअे। हिंसप्रस की रीढ ही टूट गयी।

आजाद की शहादत के बाद एक महीने के अंदर ही दूसरा एक आघात दल को लगा। २३ मार्च १९३१ के दिन लाहोर जेल में भगतसिंग, सुखदेव और राजगुरु को फाँसीपर लटकाया गया। धन्वंतरी, कैलाशपति, सुखदेवराज, इन्द्रपाल पहले ही गिरफतार हो चुके थे। अब यशपाल एकमात्र सबसे पुराने साथी, वे भी फरार अवस्था में, बचे थे।

— यशपाल : कमांडर – इन –चीफ —

दल के बचे हुअे साथियोंने संगठन के सारे सूत्र यशपाल के हाथों में सौंपकर उन्हें दल का सेनापति [कमाण्डर – इन – चीफ] बनाया। नैया तो कबकी टूट चुकी थी। ऐसी जीर्ण नैया को सँवारनेका कठिन कार्य यशपाल पर आ गया। यशपाल दल के पुन:संगठन का प्रयत्न करने लगे। स्वयं को पुलिस की नजरों से बचाकर, बचे खुचे साथियों के साथ दल का कार्य करने की उनपर आयी यह कठिन जिम्मेदारी थी। काशीराम, भगवानी सहाय,

राजेन्द्र निगम और सुरेन्द्र पांडे इन साथियों के आधारपर यशपाल ने "हिंसप्रस" के कमाण्डर-इन-चीफ का पदभार ग्रहण करते ही अपने दल के सैध्दान्तिक पक्ष का घोषणा-पत्र देहरादून से प्रकाशित किया। उसमें अपने उद्देश्य के बारे में उन्होंने लिखा, "हमारा लक्ष्य देश से देशी - विदेशी शोषण को समाप्त करना और देश के सब परिश्रम करनेवालों को आत्म निर्णय का अधिकर देना है, जिस में सभी स्त्री-पुरुषों को समान रूपसे रोजी कमाने, विकास करने और अपने परिश्रम का पूरा फल पाने का पूरा अवसर होगा।

ह. यशपाल, कमाण्डर-इन-चीफ
"हिंसप्रस" [१]

— यशपाल की गिरफतारी --

यशपाल ने अब दिल्ली में रहकर कार्य करने का निश्चय किया। उसी के अनुसार प्रकाशवतीजी और यशपाल दिल्ली आये। जनवरी २२ की सुबह की गाडी से वे इलाहाबाद गये। इलाहाबाद में रात के ९।। बजे पहूँचे। वहाँ स्टेशनपर श्रीकृष्ण श्रीवास्तव उन्हें लेने आये थे। उनके साथ वे कृष्णा हाटल के ऊपर आयरिश महिला सावित्री देवी के मकान में ठहरे। यहींपर उन्हें धोखा हुआ। श्रीकृष्ण श्रीवास्तव ने पुलिस को सिर्फ खबर ही नहीं दी परंतु यशपाल का पिस्तोल भी वह लेता गया। उसी रात यशपाल पुलिस केसाथ लडते लडते पकडे गये।

यशपाल की गिरफ्तारी के साथ "हिंसप्रस" का कार्य एकदम ठण्डा हो गया। इस प्रकार ८ अप्रैल १९२८ में स्थापित

---

१. सिंहावलोकन भाग ३ : यशपाल : पृष्ठ १०७ संस्करण १९८२.

"हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र संघ" २२ जनवरी १९३२ को सच्चे अर्थ में ठप्प हो गया।

-- उ प सं हा र --

इस देश की स्वतंत्रता , सामाजिक एकता, शोषण का विरोध, श्रमिकों का अधिराज्य आदि सिध्दान्तों पर निर्मित आतंकवादी नौजवानों का दल " हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ " निश्चय ही स्वतंत्रता की वेदीपर शहीदों की कुर्बानियोंकी संतत बरसात ही करता रहा। इस संघ ने देश के नौजवानो के दिलों में स्वतंत्रता के विचार स्फुल्लिंग भडकाये और समूचे देश में इन मुठ्ठीभर क्रान्तिकारकोंकी यशोगाथाएँ गायी जाने लगी। अंग्रेजोंको यदि सब से अधिक डर किसी का था , तो इन आतंकवादियों का ही। इस आंदोलन के बारे में डॉ. ब्रजकुमार पाण्डेय लिखते है , " नि:संदेह आतंकवादी आंदोलन कांग्रेस पार्टी द्वारा संचलित आंदोलन से बिल्कुल अलग था। हर समय सरपर कफन बाँध चलनेवाले नौजवानों ने सब से अधिक कुर्बानी दी, और उन की आहुतियोंने युवकों को आजादी के लिए लडने को अदम्य प्रेरणा प्रदान की, स्वतंत्रता आंदोलन को प्रबल वेग से आगे बढाया। स्वर्णाक्षरों के अतिरिक्त कोई मामूली स्याही उनके योगदान को इतिहास के पृष्ठों में अंकित करने में समर्थ नही हो सकती। " [१]

---

१. यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व : क्रान्तिकारी आन्दोलन संपादक - रामव्या पाण्डेय : ले. डा. ब्रजकुमार पाण्डेय पृ. ३७ संस्करण १९७८.

इन वीरों के बहुतसे प्रयत्न अंग्रेजों ने क्रुरता से दबाए। महात्मा गांधी जैसे मान्यवर नेताओंने भी इन्हें अराष्ट्रीय और हिंसक कहा , परंतु इन लोगोंकी शाहादतें व्यर्थ नहीं गयी। समूचे देश में इन शाहीदोंकी पूजा होती रही और आगे भविष्यत मे भी होती रहेगी।

.....

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR